

कामसूत्र में लोककल्याण की भावना

Bikram Badyakar

Research Scholar, Department of Sanskrit
University of Delhi, New Delhi-110007

Dr. Anand Kumar

Associate Professor, Department of Sanskrit
Deshbandhu Collage, University Of Delhi, New Delhi- 110019

विषयसार : महर्षि वात्स्यायन रचित कामसूत्र केवल कामशास्त्र का ग्रंथ नहीं, बल्कि समग्र जीवन-दर्शन है, जिसमें व्यक्ति और समाज के मध्य संतुलन स्थापित करने की शिक्षा दी गई है। यह ग्रंथ भारतीय संस्कृति के चार प्रमुख पुरुषार्थों—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—में से काम की मर्यादित और संतुलित व्याख्या करता है। कामसूत्र का उद्देश्य केवल शारीरिक सुख तक सीमित नहीं, बल्कि व्यक्ति के मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक कल्याण से भी जुड़ा हुआ है, जिससे समाज में शांति, समरसता और नैतिकता बनी रहे। कामसूत्र में लोकमंगल की भावना स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। इसमें वैवाहिक जीवन को स्थिरता देने, स्त्री-पुरुष संबंधों में संतुलन बनाए रखने, नारी सम्मान को स्थापित करने और समाज में यौन-नैतिक मूल्यों को सुदृढ़ करने पर बल दिया गया है। वस्तुतः, कामसूत्र एक ऐसा ग्रंथ है जो व्यक्ति के निज आनंद और समाज के सामूहिक कल्याण के बीच समन्वय स्थापित करता है। यह केवल भौतिक सुख की शिक्षा नहीं देता, बल्कि प्रेम, समर्पण, पारिवारिक स्थिरता और नैतिकता के आधार पर समाज के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है।

कूट-शब्द : विश्वशान्ति, लोकमंगल, मानवीय गुण, भारतीय संस्कृति, वेद, उपनिषद्, काम, कामसूत्र

प्रस्तावना : “विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आ सुव।।”¹

अर्थात् ‘है सविता देव! हमारे समस्त दुराचारों को दूर करें एवं जो हमारे लिए कल्याणकारी हो वह हमें प्राप्त कराएँ।’ विश्वशान्ति एवं लोकमंगल की अवधारणा संपूर्ण मानवता के कल्याण से जुड़ी हुई है। जब व्यक्ति और समाज मानवीय गुणों का विकास करते हैं और नैतिकता, करुणा तथा सह-अस्तित्व को अपनाते हैं, तब विश्व में शांति और समृद्धि स्थापित होती है। भारतीय संस्कृति में वेद, उपनिषद् और धर्म के मूल सिद्धांतों में इन्हीं गुणों के विकास पर बल दिया गया है, जो विश्वशान्ति की दिशा में एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं। भारतीय संस्कृति सहिष्णुता, करुणा, अहिंसा और विश्वबंधुत्व की भावना को महत्व देती है।

“वसुधैव कुटुंबकम्” का सिद्धांत दर्शाता है कि संपूर्ण विश्व एक परिवार है। यह विचारधारा केवल भारत तक सीमित न रहकर संपूर्ण मानवता को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती है। यदि व्यक्ति अपनी चेतना को विस्तृत कर वैश्विक स्तर पर परोपकार की भावना को अपनाए, तो लोकमंगल की प्राप्ति संभव हो सकती है।

¹ यजुर्वेद 30.3

वेद और उपनिषद् में मानव जीवन के उच्चतम आदर्शों की व्याख्या की गई है। वेदों में यज्ञ, दान, सत्कर्म एवं समर्पण की भावना को प्रमुखता दी गई है, जो समाज को एकजुट रखने और आपसी सहयोग को बढ़ावा देने में सहायक हैं। ऋग्वेद का प्रसिद्ध मंत्र **"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः"** इस बात का परिचायक है कि भारतीय संस्कृति संपूर्ण मानवजाति की मंगलकामना करती है। उपनिषदों में ज्ञान, ध्यान और आत्मबोध पर बल दिया गया है, जिससे व्यक्ति आंतरिक शांति प्राप्त कर सकता है और इसे समाज में प्रसृत कर सकता है।

भगवद्गीता में वर्णित **"अहिंसा परमो धर्मः"** का सिद्धांत हमें सिखाता है कि शांति, करुणा और सहभाव के बिना विश्व में सुख और समृद्धि असंभव है। गीता में निष्काम कर्म की महिमा बताई गई है, जिससे व्यक्ति समाज और विश्व के कल्याण के लिए कार्य कर सकता है। इसीप्रकार बुद्ध, महावीर, गुरुनानक और अन्य संतों ने भी विश्वशांति एवं लोकमंगल के लिए अहिंसा, प्रेम और सेवा का मार्ग अपनाने का संदेश दिया।

कामसूत्र भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें 'काम' पुरुषार्थ का धर्मानुकूल एवं विस्तृत है। भारतीय संस्कृति के अमूल्य ग्रंथ कामसूत्र में परोपकारी ऋषि वात्स्यायन की लोककल्याण-प्रधान भावना विद्यमान है, जो इसे विशुद्ध लोकमंगलकारी ग्रंथ बनाती है। महर्षि वात्स्यायन ने स्वयं कामसूत्र में स्पष्ट किया है किस उद्देश्य से यह अनुपम एवं अद्वितीय ग्रंथ लिखा गया है। वे कहते हैं -

तदेतद्ब्रह्मचर्येण परेण च समाधिना।

विहितं लोकयात्राऽर्थं रागार्थोऽस्य न संविधिः॥²

अर्थात् इस ग्रन्थ की रचना अमोघ ब्रह्मचर्य और निर्विकल्पक समाधि के द्वारा वात्स्यायन ने लोकव्यवहार को सरल, सुचारू और सफल बनाने के लिए की ही। इसका प्रयोजन और विधान रति-राग नहीं है।

महर्षि वात्स्यायन रचित कामसूत्र में ३६ अध्याय, ६४ प्रकरण, १२५० श्लोक और सात अधिकरण हैं³ - साधारण, साम्प्रयोगिक, कन्यासम्प्रयुक्त, भार्याधिकारिक, पारदारिक, वैशिक, एवं औपनिषदिक। पूर्वाचार्यों के शास्त्रों को एकत्र कर, उनका अध्ययन तथा उनके प्रयोगों का परीक्षण करके बड़े यत्न से संक्षेप में कामसूत्र को कहा गया है -

“पूर्वशास्त्राणि संदृश्य प्रयोगाननुसृत्य च।

कामसूत्रमिदं यत्नात्संक्षेपेण निवेदितम्॥⁴

कामसूत्र केवल कामशास्त्र नहीं, अपितु लोककल्याण, सांस्कृतिक समन्वय और सामाजिक मंगलभाव से परिपूर्ण एक अद्वितीय ग्रंथ है। काम एक ऐसा विषय है जिसे समाज में निंदा और पाप की दृष्टि से देखा जाता है। किन्तु काम की और प्राणियों की प्रवृत्ति तो स्वाभाविक ही है। वृहदारण्यकोपनिषद् में कहा गया है कि -

“अथ खल्वाहुः काममय एवायं पुरुष इति।⁵

² कामसूत्र.7.2.57

³ कामसूत्र १।१।२३

⁴ कामसूत्र ७।२।५२

⁵ वृहदारण्यकोपनिषद् ४/४/५/६

अर्थात् 'यह पुरुष काममय है।' ऋषि वात्स्यायन ने स्वयं काम को आहार के समान माना है -

“शरीरस्थितिहेतुत्वादाहारसधर्माणो हि कामाः।”⁶

अर्थात् यदि देखा जाए तो काम हमारे चित्त की एक स्वाभाविक अवस्था है। यह प्रकृति द्वारा प्रदत्त एक सहज प्रवृत्ति है, जो न केवल व्यक्ति के मानसिक और शारीरिक संतुलन के लिए आवश्यक है, बल्कि समाज और सृष्टि की निरंतरता का आधार भी है। फिर भी समाज में इसे पाप और निंदा की दृष्टि से देखा जाता है और लोग इसे तिरस्कृत विषय बनाने में ही अपनी महानता समझते हैं। समाज में काम के संबंध में अनेक भ्रांतियाँ व्याप्त हैं। एक ओर हम इसे बुरी दृष्टि से देखते हैं, पाप और निंदा का विषय मानते हैं तो दूसरी ओर मन ही मन इसके आकर्षण में फँसे रहते हैं। यह वास्तव में एक प्रकार की मिथ्याचारिता (hypocrisy) है, जिसे श्रीमद्भगवद्गीता में "मिथ्याचार" कहा गया है—अर्थात्, बाह्य रूप से त्याग का प्रदर्शन करना, लेकिन अंतःकरण में उसी में लिप्त रहना।

भारतीय संस्कृति में काम को त्याज्य नहीं, बल्कि एक महत्वपूर्ण पुरुषार्थ माना गया है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—ये चार पुरुषार्थ जीवन को संतुलित और पूर्ण बनाते हैं और इनमें से प्रत्येक का अपना स्थान और महत्व है। काम भी उसी प्रकार जीवन के लिए आवश्यक है, जैसे धर्म और मोक्ष।

यह आवश्यक है कि सम्यक् संकल्प्य सम्यक् संकल्प्य काम (इच्छा) को दमन या नकारात्मक दृष्टि से देखने के बजाय, इसे समझा और आत्मसात किया जाए। ज्ञान, चाहे किसी भी विषय का हो, सदा पवित्र होता है -

“न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।”⁷

जिस प्रकार अज्ञानता किसी भी विषय को विकृति में बदल सकती है, उसी प्रकार सही ज्ञान व्यक्ति को बंधनों से मुक्त कर सकता है -

“सा विद्या या विमुक्तये।”

वात्स्यायन ने भी कहा है कि इस कामशास्त्र को पढ़ने वाला व्यक्ति अन्ततः जितेन्द्रिय ही बन जाता है—

रक्षन्धर्मार्थकामानां स्थितिं स्वां लोकवर्तिनीम्।

अस्य शास्त्रस्य तत्त्वज्ञो भवत्येव जितेन्द्रियः॥”⁸

अतः काम पुरुषार्थ के संबंध में प्रचलित भ्रांतियों को दूर करने में तथा काम के विषय में समाज को सही दिशा दिखाने में कामसूत्र का योगदान अभूतपूर्व है - ऐसा कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

पर्यालोचना: कामसूत्र के प्रारम्भ में ही ब्रह्मा से लेकर वात्स्यायन तक एक कामशास्त्रीय परम्परा का उल्लेख ग्रन्थकार ने किया है, जिससे हम जान पाते हैं कि, **प्रजापति ब्रह्मा ने मानव-जीवन को नियमित तथा व्यवस्थित बनाने एवं जीवन का लक्ष्य निर्धारित करने के लिए धर्म, अर्थ और काम के उपदेश वाला एक संविधान प्रस्तुत किया जो एक लाख अध्यायों का था।**⁹ इससे काम को लेकर संसार के प्रति ब्रह्मा के लोक कल्याण की भावना ही अभिव्यक्त होती है।

⁶ कामसूत्र १/२/३७

⁷ गीता-4/38

⁸ कामसूत्र -7/2/56

⁹ कामसूत्र 1/1/5

शिव के अनुचर नन्दी ने उस संविधान ग्रन्थ से कामशास्त्र विषयक भाग को पृथक् कर सहस्र अध्यायों का कामशास्त्र सम्पादित किया।¹⁰ उसी संस्करण से श्वेतकेतु ने पाँच सौ अध्यायों का एक संक्षिप्त संस्करण तैयार किया।¹¹ इसके बाद पांचाल देश के बाभ्रव्य ऋषि ने श्वेतकेतु द्वारा सम्पादित संस्करण को डेढ़ सौ अध्यायों का एक संक्षिप्त संस्करण तैयार किया जिसमें सात अधिकरण थे।¹² बाभ्रव्य द्वारा सम्पादित कामशास्त्र का व्यापक प्रचलन हो जाने के बाद पाटलीपुत्र की गणिकाओं द्वारा अनुरोध किए जाने पर आचार्य दत्तक ने बाभ्रव्य द्वारा सम्पादित कामशास्त्र के षष्ठतम भाग वैशिक अधिकरण को पृथक् किया।¹³ गणिका भी समाज का एक हिस्सा है, उनके लिए उपयोगी उपदेश दत्तक ने देकर कामशास्त्र में लोकमंगल की भावना को ही प्रमाणित किया। आचार्य वात्स्यायन ने भी कामसूत्र के वैशिक अधिकरण में वेश्याओं के लिए उपयोगी उपदेश दिये हैं।

बाभ्रव्य द्वारा सम्पादित कामशास्त्र के साधारण अधिकरण को आचार्य चरायण ने, आचार्य सुवर्ननाभ ने साम्प्रयौगिक अधिकरण को, आचार्य घोटकमुख ने कन्यासम्प्रयुक्तक अधिकरण को, आचार्य गोर्नदीय ने भार्याधिकारिक को, आचार्य गणिकापुत्र ने पारदारिक अधिकरण को एवं आचार्य कुचुमार ने औपनिषदिक अधिकरण को कामशास्त्र से पृथक् किया।¹⁴ बाभ्रव्य द्वारा सम्पादित कामशास्त्र विशालकाय होने से तथा दत्तक आदि के द्वारा पृथक्कृत कामशास्त्र का संपूर्ण अंश न होने से वात्स्यायन ने कामसूत्र की रचना की।¹⁵ अर्थात् कामसूत्र की रचना समाज के लोगों की सुविधा और कल्याण के लिए ही की गई है।

कामसूत्र में कला विषयक चर्चा अत्यन्त महत्वपूर्ण है। संस्कृत साहित्य में कलाशास्त्र का आधारभूत ग्रन्थ कामसूत्र ही है - ऐसा बहुत से विद्वानों का मानना है। नृत्य, गीत, वाद्य - इसप्रकार से चौसठ कलाओं का उल्लेख इस ग्रन्थ में किया गया है। वात्स्यायन ने स्त्री-पुरुष दोनों के लिए इन कलाओं का ज्ञान रखना आवश्यक माना है। परन्तु स्त्रियों की कलाशिक्षा को न केवल आवश्यक माना गया अपितु कलाज्ञान के लिए छः प्रकार के कला-शिक्षकों का भी निर्देश वात्स्यायन ने किया है। कलाशिक्षा को प्राप्त कर ही शील, गुण और रूप से सम्पन्न वेश्याएँ 'गणिका' का विशिष्ट पद प्राप्त कर लेती हैं और उच्चस्तरीय नागरिक गोष्ठी में स्थान पाती हैं।¹⁶ राजा सदैव उसका सम्मान करता है, गुणी लोग उसकी प्रशंसा करते हैं और कला का ज्ञान प्राप्त करने वाले लोग प्रार्थना करते हैं। इसप्रकार वह सभी का लक्ष्यबिन्दु हो जाती है।¹⁷ इन कलाओं के प्रयोग को जानने वाली राजपुत्री और मन्त्रीपुत्री सहस्रों सपत्नियों के होने पर भी पति को अपने अधीन कर लेती हैं।¹⁸ साधारण स्त्रियों के लिए बताते हैं कि इन कलाओं में निपुण स्त्री पति के विदेश जाने पर, वैधव्य आदि विपदा आने पर और अन्य देश में स्थित होने पर भी, इन विद्याओं से सुखपूर्वक जीवन यापन कर सकती हैं।¹⁹ पुरुषों को कलाज्ञान प्राप्त करने से क्या लाभ मिलता है इसके लिए महर्षि वात्स्यायन आगे बताते हैं कि उक्त कलाओं में निपुण वाचाल एवं चाटुकार पुरुष

¹⁰ कामसूत्र 1/1/8

¹¹ कामसूत्र 1/1/9

¹² कामसूत्र 1/1/10

¹³ कामसूत्र 1/1/11

¹⁴ कामसूत्र 1/1/12

¹⁵ कामसूत्र 1/1/14

¹⁶ कामसूत्र 1/3/17

¹⁷ कामसूत्र 1/3/18

¹⁸ कामसूत्र 1/3/19

¹⁹ कामसूत्र 1/3/20

असाधारण न होते हुए भी स्त्रियों के चित्त को शीघ्र ही आकृष्ट कर लेता है।²⁰ कलाओं के प्रयोग से ही पुरुषों का सौभाग्य जाग उठता है और देश-काल का प्रयोग कर यदि इनका प्रयोग किया जाये तो वह कभी निष्फल नहीं होता।²¹

नृत्य गीत आदि चौसठ कलाओं से भिन्न चौसठ 'पांचालिकी कलाएँ' हैं, जिन्हें 'कामकला' के रूप में भी जाना जाता है। कामसूत्र में इसका उपदेश स्त्री यौन-मनोविज्ञान को समझते हुए यौनजीवन को आनन्दपूर्ण बनाने के लिए दिया गया है। इसप्रकार स्त्री-पुरुष दोनों के बीच प्रेम को बढ़ाने के लिए एवं दाम्पत्य और यौनजीवन को सुख और आनन्दमय बनाने के लिए ही इन कामकलाओं का उपदेश महर्षि ने दिया है। इससे कामसूत्र में लोकमंगल की भावना ही प्रतिध्वनित होती है।

पहले अधिकरण के 'नागरकवृत्त प्रकरण' में बताया गया है कि पुरुष को ब्रह्मचर्य की अवस्था में विद्या अर्जन करने के बाद, धन कमाने के लिए अवश्य प्रयत्न करना चाहिए। उसके बाद ही गार्हस्थ्य आश्रम में प्रवेश करना चाहिए। यही वह आश्रम है, जिसपर अन्य तीन आश्रम आश्रित हैं। इसलिए विवाह करके गृहस्थी बनने से पहले धनोपार्जन अत्यन्त आवश्यक है। महर्षि ने धनोपार्जन के लिए उपाय भी बताये हैं। उन्होंने निर्देश दिया कि ब्राह्मण दान के ग्रहण से, क्षत्रिय युद्ध विजय से, वैश्य व्यवसाय से और शूद्र सेवा आदि से धन अर्जित करे।²² इससे भी लोक मंगला की भावना व्यक्त होती है।

स्त्रियों के मृगी, वडवा और हस्तिनी एवं पुरुषों का शश, वृष और अश्व - ये तीन तीन भेद पुरुषों के यौनांग की लंबाई के आधार पर एवं स्त्रियों के जननेन्द्रिय की गहराई के आधार पर किया गया है। यह भेद सम्पूर्ण विश्वसाहित्य में अद्वितीय एवं महत्वपूर्ण है। पुरुषों के भेद (लिंग की लंबाई के आधार पर): 1. शश (खरगोश जैसा) - लिंग छोटा। 2. वृष (बैल जैसा) - लिंग मध्यम 3. अश्व (घोड़े जैसा) - लिंग लंबा। इसी प्रकार स्त्रियों के भेद (योनि की गहराई के आधार पर): 1. मृगी (हिरणी जैसी) - योनि उथली, 2. वडवा (घोड़ी जैसी) - योनि मध्यम। 3. हस्तिनी (हाथिनी जैसी) - योनि गहरी —

“शशो वृषोऽश्व इति लिङ्गतो नायकविशेषः। नायिकाः पुनर्मृगी वडवा हस्तिनी चेति।”²³

अब अगर इस स्थिति में शश पुरुष के साथ हस्तिनी स्त्री का शारीरिक-सम्बन्ध हो तो फिर सामान्यतः वह स्त्री संतुष्टि नहीं होगी। इस अवस्था में कुछ विशेष कामासन का प्रयोग करके ही उसे संतुष्ट किया जा सकेगा। इसीप्रकार अगर मृगी स्त्री के साथ अश्व पुरुष का विवाह हो तो फिर मृगी-स्त्री को शारीरिक संबंध बनाने में कष्ट होगा। लेकिन कामसूत्र में प्रतिपादित कुछ आसनों का प्रयोग किया जाय तो यौन-संतुष्टि मिलेगी और सम्बन्ध बनाने में कठिनाई भी नहीं होगी। इस प्रकार दोनों में मानसिक और भावनात्मक संबंध भी सुदृढ़ होगा। इसलिए महर्षि वात्स्यायन प्रतिपादित यह स्त्री-पुरुष का भेद और कामासन तथा अन्य आलिंगन चुम्बन आदि कामकला से लोककल्याण की भावना अभिव्यक्त होता है।

विवाह को लेकर भी जितेन्द्रिय मुनि ने कुछ वास्तविक ज्ञान प्रदान किया जो आधुनिक समय में भी उपयोगी है। उन्होंने बताया है कि एक साथ खेलना, विवाह करना और मित्रता करना ये तीनों कार्य अपने समान स्थिति और समानशील पुरुषों के साथ करने चाहिए। न तो अपने से ऊँचे से और न ही अपने से नीचे के साथ करे -

“समस्याद्याः सहक्रीडा विवाहाः सङ्गतानि च।

समानैरेव कार्याणि नोत्तमैर्नापि वाधमैः।।”²⁴

²⁰ कामसूत्र 1/3/21

²¹ कामसूत्र 1/3/22

²² गृहीतविद्यः प्रतिग्रहजयक्रयनिरःवेशाधिगतैररीथैरन्वयागतोरुभयैर्वा गार्हस्थ्यमधिगम्य नागरकवृत्तं वर्तते। कामसूत्र -1/4/1

²³ कामसूत्र 2/1/1

²⁴ कामसूत्र 3/1/20

पुरुषों को उपदेश देते हुए कहा है कि जो व्यक्ति अपने से अधिक धनवान की लड़की से विवाह करता है उसे भृत्य के समान रहना पड़ता है। इस प्रकार के सम्बन्ध को 'उच्च सम्बन्ध' कहा जाता है। ऐसे सम्बन्ध को बुद्धिमान लोग कभी नहीं करते।²⁵

महर्षि ने और भी आगे बताया कि निर्धन घर की कन्या से विवाह कर पति पत्नी के ऊपर स्वामी बनकर शासन करता है, स्त्री सदैव दासी बनी रहती है। इस प्रकार का संबंध हीन सम्बन्ध कहा जाता है। सज्जन पुरुष ऐसे सम्बन्ध को निन्दित मानते हैं।²⁶

किस स्थिति में एक विवाह आदर्श हो सकता है उसके बारे में आगे कामसूत्रकार ने आगे कहा है कि जिस विवाह से पति-पत्नी को समान आनन्द की अनुभूति हो, दोनों एक दूसरे के परिपूरक और शोभावर्धक हों वह विवाह 'आदर्श विवाह' होता है।²⁷

ऐसा विवाह केवल गांधर्व-विधि से ही संभव होता है और इस प्रकार के विवाह को महर्षि ने पूर्ण समर्थन प्रदान किया है। महर्षि के मत में गांधर्व विवाह अन्य विवाहविधि से श्रेष्ठ है क्योंकि विवाह का फल होता है अनुराग प्राप्त करना। बिना प्रेम के विवाह निष्फल होता है इसलिए माध्यम होते हुए भी गांधर्व विवाह उचित माना जाता है। इसमें प्रेम अनुराग का सुन्दर योग रहता है—

“व्यूढानां हि विवाहानामनुरागः फलं यतः।

मध्यमोऽपि हि सद्योगो गान्धर्वस्तेन पूजितः॥”²⁸

गांधर्व विवाह सुखद, अल्पप्रयत्न, अल्पक्लेश साध्य और विधि-विधानों के बखेड़ों से रहित प्रेम-प्रधान होता है। इसलिए इसे श्रेष्ठ माना जाता है —

“सुखत्वादबहुक्लेशादपि चावरणादिह।

अनुरागात्मकत्वाच्च गान्धर्वः प्रवरः मतः॥”²⁹

इस प्रकार विवाह को लेकर जो बातें महर्षि वात्स्यायन ने बताई वह वर्तमान में भी अत्यन्त कल्याणकारी है।

‘भार्याधिकरण’ नामक चतुर्थ अधिकरण में एकचारिणी और सोतों वाली भेद से भार्या के भेद करते हुए एक आदर्श भार्या के स्वरूप का वर्णन किया गया है। उसे अपने पति, सपत्नी, सास-ससुर, ननद-नन्दोई और नौकर-चाकर के साथ ठीक से व्यवहार करने का उपदेश दिया गया है। गृहिणी ही घर या परिवार का मूल आधार है। भारतीय संस्कृति में गृहिणी का आदर्श स्वरूप महाकवि विशाखदत्त ने अपने मुद्राराक्षस नाटक में चित्रित किया है —

“गुणवत्युपायनिलये! स्थितिहेतो! साधिके! त्रिवर्गस्य।

मद्भवननीतिविद्ये! कार्यादार्ये द्रुतमपेहि॥”³⁰

²⁵ का.सु – 3/1/21

²⁶ का.सु – 3/1/22

²⁷ का.सु – 3/1/23

²⁸ कामसूत्र - 3/5/29

²⁹ कामसूत्र - 3/5/30

³⁰ मुद्राराक्षस 1/5

इसलिए अगर वह ठीक रही तो पूरा परिवार सुख और शान्ति से रह सकता है। इसी कारण परिवार को और भी सुदृढ़ बनाने के लिए इस अधिकरण की रचना कर महर्षि ने कल्याण की भावना को ही प्रकट किया है।

कामसूत्र का पञ्चम अधिकरण है 'पारदारिक अधिकरण'। इसमें संपूर्ण अधिकरण में महर्षि ने परकीया विषयक चर्चा की है। पर वात्स्यायन ने लोककल्याण की भावना से सतर्क करते हुए कहा कि पुरुषों को भलाई और स्त्रियों के सतीत्व की रक्षा के लिए ही यह प्रकरण लिखा गया है —

“तदेतद्दारगुप्यर्थमारब्धं श्रेयसे नृणाम्।

प्रजानां दूषणायैव न विज्ञेयोऽस्य संविधिः॥”³¹

इस अधिकरण को महर्षि वात्स्यायन ने समाज के कल्याण की दृष्टि से ही लिखा है। कामसूत्र में परस्त्रीगमन के सम्बन्ध में यद्यपि बहुत कुछ बताया फिर भी ऋषि ने इसका समर्थन नहीं किया है –

“पाक्षिकत्वात्प्रयोगाणामपायानां च दर्शनात्।

धर्मार्थयोश्च वैलोम्यान्नाचरेत्पारदारिकम्॥”³²

अर्थात् इस शास्त्र में यह दिखाया जा चुका है कि पराई स्त्रियों से सम्बन्ध करना दोनों लोकों को बिगड़ता है। इसलिए कोई भी बुद्धिमान पुरुष इस बुरे कर्म में प्रवृत्त होने की इच्छा न करे।

अपनी प्रियतमा स्त्री की रक्षा दूसरे कामी लोगों से कैसे करनी होती है उसका भी विधान इस अधिकरण में दिया गया है—

“संहृश्य शास्त्रतो योगान्पारदारिकलक्षितान्।

न याति च्छलनां कश्चित्स्वारान् प्रति शास्त्रवित्॥”³³

अर्थात् पराई स्त्रियों को किस प्रकार व्यभिचारी लोग फँसाया करते हैं, उनके सभी हथकंडों को इस कामसूत्र के पारदारिक अधिकरण में पढ़कर कोई बुद्धिमान अपनी स्त्री के विषय में धोखा नहीं खा सकता है। इस प्रकार से पञ्चम अधिकरण से भी लोककल्याण की भावना प्रकट होती है।

छठे अधिकरण 'वैशिक अधिकरण' में वेश्याओं के चरित्र तथा उनके समागम-उपायों आदि का वर्णन किया गया है। वात्स्यायन ने वेश्या-गमन को एक प्रकार का दुर्व्यसन माना है और उसका कथन है कि वेश्या-गमन से शरीर और अर्थ दोनों का सर्वनाश होता है। यद्यपि वेश्या समाज का अङ्ग है उसका उपभोग समाज करता ही है इसलिए सामान्य मनुष्यों और वेश्याओं के हित को ध्यान में रखते हुए ग्रन्थकार ने इस अधिकरण में वेश्याओं के चरित्र का विस्तृत विवेचन किया है।

औपनिषादिक अधिकरण में 'वाजीकरण' से सम्बन्धित विषयों पर प्रकाश डाला गया है। यह वाजीकरण आयुर्वेद का आठवाँ अङ्ग है। इसमें सम्भोग के लिए वाजी यानी कि अश्व के समान शक्ति बढ़ाया कैसे जाय, उस शक्ति को कैसे बना रखे एवं अन्य प्रसंग – जैसे लिंग दृढीकरण, लिंग स्थूलीकरण, योनि-संकोचन, योनि-प्रसारण आदि विधियाँ बतायी गई हैं। वर्तमान युग में जिसप्रकार सेक्सोलॉजिस्ट समाज का उपकार करता है, उसी प्रकार प्राचीन काल में कामसूत्र का सातवाँ अधिकरण तथा आयुर्वेदशास्त्र भी इस कार्य को करते थे। इसलिए यह कह सकते हैं कि इस अधिकरण का संयोजन लोकहित के लिए किया गया था।

इस प्रकार सरल शब्दों में कहा जाय तो जिस प्रकार धर्म को जानने के लिए धर्मशास्त्रीय ग्रंथों की आवश्यकता होती है, अर्थ विषयक ज्ञान अर्थशास्त्र से मिलता है, उसी प्रकार कामभोग के लिए स्त्री-पुरुषों को बहुत से उपायों की आवश्यकता होती है और उन उपायों का ज्ञान कामसूत्र से प्राप्त होता है, किसी अन्य शास्त्रों से नहीं —

³¹ कामसूत्र – 5/6/48

³² कामसूत्र – 5/6/47

³³ कामसूत्र – 5/6/46

“सम्प्रयोगपराधीनत्वास्त्रीपुंसयोरुपायमपेक्षते।³⁴

सा चोपायप्रतिपत्तिः कामसूत्रादिति वात्स्यायनः।”³⁵

अतएव यह कहना उचित होगा कि स्त्री-पुरुष के मध्य सम्बन्ध को सुन्दर, मधुर, सरस और सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए, गार्हस्थ्य जीवन को सुखी बनाने के लिए, समाज में कामगत नैतिकता तथा धर्म की भावना बढ़ाने के लिए अर्थात् लोकमंगल के लिए ही कामसूत्र का प्रणयन हुआ —

“विहितं लोकयात्रार्थं रागार्थोऽस्य न संविधिः।।”³⁶

अर इस कामसूत्र की रचना वात्स्यायन ने लोक-व्यवहार को सुचारु, सफल और सुन्दर बनाने के लिए की है। अतः स्पष्ट है कि इसका प्रयोजन और विधान रति-राग नहीं है।

उपसंहार – किसी भी शास्त्र का मूल उद्देश्य सदैव मानव-कल्याण ही रहा है। शास्त्रों में प्रतिपादित ज्ञान से मनुष्य का जीवन व्यवस्थित, नियमित, सुंदर तथा सरल बनता है। अतः प्रत्येक शास्त्र में लोककल्याण की भावना स्वाभाविक रूप से निहित रहती है। इसी प्रकार *कामशास्त्र* भी केवल भोग-विलास का मार्ग नहीं दिखाता अपितु उसमें लोककल्याण का गहन स्वरूप अंतर्निहित है। अन्य पुरुषार्थों की अपेक्षा *काम* एक ऐसा पुरुषार्थ है, जिसे प्रायः निन्दनीय या पापदृष्टि से देखा गया है। फलस्वरूप लोग इस विषय पर खुलकर चर्चा करने से कतराते हैं और यह प्रायः एक गुप्त विषय बना रहता है। परन्तु यथार्थ यह है कि मनुष्य *कामभावना* से पूर्णतः मुक्त नहीं हो सकता। जब तक मन का अस्तित्व है, तब तक उसमें *काम* का अस्तित्व भी अनिवार्य रूप से विद्यमान रहेगा। वास्तव में, जिस प्रकार सामान्य इच्छाएँ मन का स्वभाव हैं, उसी प्रकार *कामेच्छा* भी मन का एक स्वाभाविक धर्म है। इसी कारण महर्षियों ने काम को स्वाभाविक मानते हुए ‘आहार सधर्मान’ अर्थात् आहार के समान स्वभाव वाला बताया है। मूल बात यह है कि काम कोई असामान्य या अपवित्र विषय नहीं, बल्कि एक सामान्य और स्वाभाविक प्रवृत्ति है, जो सभी प्राणियों और मनुष्यों में विद्यमान रहती है। फिर भी इस विषय पर बात करना या चर्चा करना अशिष्ट व्यवहार समझा जाता है। लेकिन स्वाभाविक रूप से जिज्ञासा के कारण बालक-बालिका, युवक-युवती इस विषय के बारे में जानने का प्रयत्न करते हैं। प्रायः वे सही मार्गदर्शन न मिलने से दोषपूर्ण स्रोतों से ज्ञान प्राप्त करते हैं और इस ज्ञान के आधार पर कोई भी अपना जीवन सम्यक् रूप से नहीं व्यतीत कर सकता। महर्षि वात्स्यायन ने *कामसूत्र* की रचना ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए की थी। यह ग्रन्थ एक क्रान्तिदर्शी ऋषि के सूक्ष्म विचारों से लोकहितार्थ लिखा गया है। इसलिए इसमें कोई संदेह नहीं कि यह शास्त्र काम से सम्बन्धित समाज और लोगों में प्रचलित अनेक भ्रान्तियों को दूर करके लोककल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है। यदि इस प्राचीन ऋषि-प्रणीत ग्रन्थ के साथ आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से *काम-संबंधी शिक्षा* (Sex Education) भी प्रदान की जाए तो यह न केवल व्यक्ति के लिए, बल्कि संपूर्ण मानवजाति के लिए अत्यंत कल्याणकारी सिद्ध होगा।

³⁴ कामसूत्र - 1/2/18

³⁵ कामसूत्र - 1/2/19

³⁶ कामसूत्र.7/2/57

सन्दर्भग्रन्थसूची

- माधवाचार्य (व्याख्याकार). कामसूत्र (वात्स्यायनमुनिप्रणीतम्). बम्बई: खेमराज- श्रीकृष्णदास-प्रकाशन, संवत् २०७८ .
- शास्त्री, श्रीदेवदत्त (व्याख्याकार). कामसूत्रम् (वात्स्यायनमुनिप्रणीत). वाराणसी : चौखम्भासंस्कृतसंस्थान ,2019.
- गैरोला, वाचस्पति. कामसूत्र परिशीलन. दिल्ली: चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, [पुनर्मुद्रित संस्करण] 2023.
- द्विवेदी, डॉ.पारसनाथ (व्याख्याकार). कामसूत्र (वात्स्यायनमुनिप्रणीत). वाराणसी : चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, 2020.
- त्रिपाठी, राधावल्लव (अनुवादक एवं व्याख्याकार). कामसूत्र (जयमंगला टीका सहित). दिल्ली : प्रतिभा प्रकाशन, संस्करण 2005.
- शर्मा, डॉ. रामानन्द (अनुवाद). कामसूत्र (वात्स्यायनमुनिप्रणीत). वाराणसी: कृष्णदास अकादमी, 2001.
- त्रिपाठी, डॉ. संकर्षण. कामसूत्रकालीन समाज एवं संस्कृति. वाराणसी: चौखम्भा विद्याभवन,2008.
- शास्त्री, ढूँढीराज (सम्पादक). कामकुंजलता . वाराणसी: चौखम्भा संस्कृत सीरिज ऑफिस, 1967.
- सातवलेकर, डॉ० श्रीपाद दामोदर(भाष्यकार). अथर्ववेद का सुबोध भाष्य (तृतीय भागे).पारडी : स्वाध्याय मण्डल, 1985.
- दास, स्वामी रामसुखदास,(भाष्यकार तथा अनुवादक). श्रीमद्भगवद्गीता. गोरखपुर: गीता प्रेस(नब्बेवाँ संस्करण)
- घोष, जगदीशचन्द्र एवं श्रीअनिलचन्द्र, घोष. श्रीमद्भगवद्गीता. कोलकाता : प्रेसीडेंसी लाइब्रेरी, 1365, बङ्गाब्द अष्टम संस्करण.
- बृहदारण्यकोपनिषद् (सानुवादशंकरभाष्यसहित) . गोरखपुर: गीताप्रेस, नवम संस्करण संवत् 2048.